ISSN 2278-8808
UGC APROVED SR. NO. 49366
SJIF 2016 = 6.177
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

मुकेश चन्द, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)

बी0एस0ए0 कॉलेज, मथुरा

Abstract

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत एवं अटल नियम है और यह समाज में घटित होनी वाली अवश्यंभावी प्रक्रिया है। हम परिवर्तन विहीन समाज की संकल्पना भी नहीं कर सकते। चाहे वह समाज आदिम हो या आधुनिक, शिक्षित या अशिक्षित, ग्रामीण हो या नगरीय यह हो सकता है कि भिन्न–2 समाजों में परिवर्तन की गति, दिशा एवं प्रकार और स्वरूप में अन्तर हो। परिवर्तन की गति कहीं तीव्र तो कहीं मन्द हो सकती है। ग्रीक विद्वान हेरेक्लिटिस के अनुसार, ''सभी वस्तुएँ परिवर्तन के बहाव में है'' मैकाइवर लिखते हैं, ''समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक हैं।'' लेकिन परिवर्तन क्यों और कैसे होता है परिवर्तन के क्या कारण है इन प्रश्नों का आज तक कोई सटीक उत्तर अप्राप्त है। इस सम्बन्ध में प्रो0 ग्रीन लिखते हैं। ''सामाजिक परिवर्तन इस लिए होता है क्योंकि प्रत्येक समाज असन्तुलन के निरन्तर दौर से गुजर रहा है।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का घनिष्ट सम्बन्ध है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षित व्यक्ति व शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के लिए भूमिका तैयार करें, और स्पष्ट करें कि समाज में किस प्रकार का परिवर्तन लाया जाये। सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक को समाज की विभिन्न क्षेत्रीय समस्याओं का समय–समय पर अध्ययन करके समाज का अभिन्न अंग बन जाना चाहिए। शिक्षा उक्त सभी बातों को पूरा करती रहेगी तभी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार समय–समय पर अनेक प्रकार के आवश्यक परिवर्तन होते रहेंगे। इस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन के पीछे एक शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है दोनों में आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। जिस प्रकार बिना आत्मा के शरीर असम्भव है। उसी प्रकार बिना शिक्षक के (जो कि समाज के नागरिकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में होता है) सामाजिक परिवर्तन कल्पना मात्र ही हैं।''

अतः शिक्षकों के महत्व एवं उनकी सामाजिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए आज भी शिक्षकों को समाज अथवा राष्ट्र का निर्माता (Nation Builders) कहा जाता है।

पारिभाषिक शब्दावलीः– सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, भूमिका

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिवर्तन किसी वस्तु में दो समय में दिखाई देने वाली भिन्नता है। सामाजिक परिवर्तन के अन्तरगत मानवीय सम्बन्धों मूल्यों, व्यवहारों, संस्थाओं, प्रथाओं, कार्य विधियों, मूल्यों आदि में परिवर्तन सम्मिलित हैं। सामाजिक परिवर्तन किसी न किसी कारक का ही परिणाम हैं। और उनमें से एक प्रमुख कारक है ''शिक्षा''।

शिक्षा का अभिप्राय अक्षर ज्ञान की नहीं अपतु समाज के नियमों एवं मूल्यों को परिवर्तित करना है शिक्षा समाज की उन्नति के लिए एक आवश्यक और शक्तिशाली साधन है। व्यक्ति

और समाज दोनों के विकास में शिक्षा परम आवश्यक हैं। अतः यह महती आवश्यकता बनती जा रही हैं कि हम सभी शिक्षा के प्रसार द्वारा अपने समाज में परिवर्तन लायें। शिक्षा के द्वारा ही कोई व्यक्ति श्रेष्ठ प्राणी बनता है। शिक्षा एक ऐसी संस्था है जिसके द्वारा मनुष्यों के विचारों, आदर्शों, आदतों और दृष्टिकोण में परिवर्तन कर समाज की प्रगति की जाती है। जिससे समाज में परिवर्तन आता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक तथा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों में सर्वोत्तम विकास किया जाता है। अपरोक्त विकास से सामाजिक परिवर्तन अपने आप होगा प्रस्तुत लेख के सन्दर्भ में ''भूमिका'' शब्द का प्रयोग शिक्षा के महत्व का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः सामाजिक परिवर्तन शिक्षा के समानुपाती होता है

शिक्षा प्रसार के अभिकरणः– शिक्षा के साधन या अभिकरण वे तत्व, कारक, स्थान या संस्थाऐं हैं, जो बालक या व्यक्ति पर शैक्षिक प्रभाव डालते हैं शिक्षा का प्रसार मुख्यतः औपचारिक साधनों (Formal Agencies) तथा अनौपचारिक साधनों (Informal Agencies) द्वारा किया जाता है। औपचारिक अभिकरणों या संस्थाओं में शिक्षा की प्रक्रिया सुविचार (नियोजित) प्रक्रिया होती है। अर्थात् इसमें पूरी शैक्षिक प्रक्रिया किसी निश्चित उद्देश्य के अनुसार व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में संचालित की जाती है। विद्यालय इस अभिकरण का प्रमुख उदाहरण है। इस अभिकरण में अनके गुणों के होते हुये भी इसमें दोष भी है। इस साधन द्वारा शिक्षा का प्रसार समाज के निम्न वर्ग, प्रौढों तथा अन्य प्रकार से बेसहाय लोगों तक नहीं किया जा सकता है। इस अभिकरण की अपनी कुछ सीमायें हैं।

शिक्षा प्रसार का दूसरा साधन या अभिकरण – अनौपचारिक साधन एक शिक्षा प्रसार के विकल्प के रूप में हमारे सागने आता है।

अनौपचारिक अभिकरणों का प्रभाव बहुत व्यापक एवं प्रभावी होता है। ये अनजाने में ही आदतों, व्यवहारों, रूचियों और दृष्टिकोणों का निर्माण करते हैं। ये बाहरी दबाब का प्रयोग करके बालक या व्यक्ति की सवतंत्रता पर अंकुश नहीं लगाते हैं। इस प्रकार अनौपचारिक अभिकरणों द्वारा शिक्षा प्रसार के बहुत लाभप्रद परिणाम होते हैं।

शिक्षा प्रसार के प्रमुख उद्देश्य आवश्यकता एवं महत्व–

अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट हो चुका है कि शिक्षा के द्वारा ही हम व्यक्ति, परिवार, समाज व देश का विकास कर सकते हैं, अतः यह हमारी महती आवश्यकता बन जाती है कि हम शिक्षा का प्रसार जन–जन करें व उसके महत्व को समझें व देश के अन्य नागरिकों को उन्हीं की सरल भाषा में समझायें। इस उद्देश्य की पूर्ति में सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता अभियान एक सार्थक कदम है, लेकिन इसकी सार्थकता को स्वीकृति तभी मिल सकती है जब इसका सकारात्मक

व्यावहारिक प्रभाव निरक्षरों व अत्यन्त पिछड़े वर्ग के (जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं) जीवन पर पड़े।

स्वतंत्रता से पूर्व से ही निरक्षरता के उन्मूलन हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। सन् 1937 में बनने वाली प्रान्तीय स्वदेशी सरकारों ने **शिक्षा प्रसार विभाग** स्थापित करके इस दिशा में संगठित प्रयास प्रारम्भ किया। स्वतंन्त्रता प्राप्ति के बाद **प्रौढ़ शिक्षा प्रसार** की आवश्यकता अनुभव की गई क्योंकि प्रौढ़ व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग के अभाव में विश्वसनीय रूप से बालक – बालिकाओं को शिक्षित नहीं किया जा सकता। शिक्षा के घनत्व की वृद्धि के लिये ''दूरस्थ शिक्षा'' को भी व्यवहार में लाया गया है।

सन् 1949 में इलाहाबाद में ''केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड'' के अध्यक्ष के रूप में व्याख्यान देते हुए माननीय मौलाना आजाद साहब ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि ''प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य केवल वयरकों को साक्षर बनाना मात्र नहीं है बल्कि उसके अन्तर्गत वह सभी प्रकार की शिक्षा आती है। जो प्रत्येक नागरिक को लोकतांत्रिक व्यवस्था का विवेकपूर्ण सदस्य बनाती है''।

अतः मौलाना जी के उक्त कथन से शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य आवश्यकता व महत्व अपने आप रेखांकित हो जाते हैं।

पारिवारिक जीवन को बेहतर बनाना शिक्षा प्रसार का एक मुख्य उद्देश्य हमारे सामने उभारकर आता है। शिक्षा के प्रसार द्वारा स्त्री तथा पुरूषों में परिवार को नियोजित करने किशोरावस्था से सम्बन्धित भ्रान्तियों को दूर करने स्वास्थ्य तथा सामाजिक जीवन से सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। सामाजिक विकास की प्रक्रिया में परिवार (अनौपचारिक साधन) एक महत्वपूर्ण प्रमाणित संस्था जो समुदाय के चरित्र, इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास तथा आत्मशक्ति का निर्धारण करती है।

निष्कर्ष–

आज देश में अनेक समस्याओं (गरीबी, बीमारियों, प्र्यावरण प्रदूषण, मानसिक तनाव, बेरोजगारी, भरण–पोषण की समस्या, दहेज की समस्या आदि) से घिरा हुआ है। शिक्षा प्रसार (Extention of Education) इन समस्याओं को दूर करने का सशक्त माध्यम है। पूर्व अनुभवगम्य अध्ययन भी इस ओर इंगित करते हैं कि कार्यात्मक साक्षरता या शिक्षा प्रसार का प्रभाव, जन्म दर में कमी, सीमित परिवार की परिकल्पना, विवाह की उम्र, नियोजित मातृत्व तथा पितृत्व, शिशु मृत्युदर में कमी, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता, समस्याओं के संदर्भ में निर्णय लेने की क्षमता का विकास, कानून की जानकारी, तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि तत्वों पर पड़ा है।

हम एक प्रजातान्त्रिक देश के नागरिक हैं, हमारे समाज व देश की प्रगति एवं विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस देश के नागरिक साक्षर हो, विवेकशील हों, अच्छे बुरे का ज्ञान रखते हों, तथा राजनैतिक अधिकारों, उत्तरदायित्व एवं कर्तव्यों से अवगत हों। इन सभी की पूर्ति में

शिक्षा के प्रसार के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा प्रसार के माध्यम से ही हम अपने देश के नागरिकों को योग्य, चरित्रवान व कर्मण्य बना सकते हैं, जो लोकतांन्त्रिक शासन–व्यवस्था का मजबूत आधार बन सकें। शिक्षा के प्रसार द्वारा व्यक्तियों में समाज व देश हित के लिए स्वहित का बलिदान करने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती है। इस प्रकार समाज शिक्षा आदर्श समाज व राष्ट्र के निमाण में योगदान देती है, और नागरिकों में सामाजिक आदर्श का समावेश शिक्षा के प्रसार द्वारा ही सम्भव हो सकेगा उपर्युक्त सफलता व उपलब्धि के लिए सर्वशिक्षा अभियान व राष्ट्रीय साक्षरता मिशन उत्तरदायी है।

सन्दर्भ सूचीः–

Society A.W. Green.

समाजशास्त्र : गुप्ता एवं शर्मा साहित्य भवन पब्लिकेशनस आगरा।

समाजशास्त्र : बी.एन. सिंह, निखिल पब्लिकेशन्स आगरा।

समाचार पत्र : दैनिक जागरण।

शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार– चौबे एस0पी0 इण्टरनेशनल बुक्स मेरठ।